3N55JY

पाठ – 12

सर्वधर्म समभाव

–डॉ.कृष्ण गोपाल रस्तोगी

धार्मिक सहिष्णुता और मानव धर्म सर्वोपरि है। युद्ध,द्वेष और कलह का भी इन पर कोई असर नहीं होना चाहिए। मानव कल्याण, विश्वबंधुत्व की भावना हर मनुष्य में सर्वोपरि हो। इस बात का प्रमाण महाराणा प्रताप और गुरू गोविन्द सिंह की इन दो प्रेरक कहानियों में मिलता है जहाँ युद्ध जीतने के बाद भी दोनों ने मानवता को सबसे ज्यादा महत्व देते हुए शत्रु–सैनिक और उनके परिवार को सम्मान, सुरक्षा और सहायता देते हुए अपनी महानता का परिचय दिया और आत्मीय व्यवहार किया।

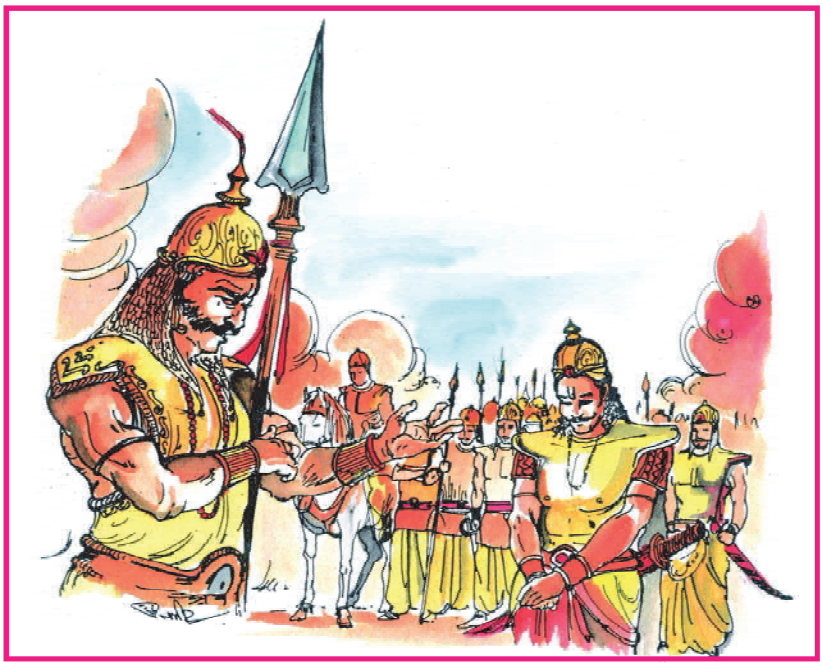

महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच युद्ध चल रहा था । कुँवर अमरसिंह के नेतृत्व में राणा का पलड़ा भारी रहा । खानखाना और उसकी सेना को मैदान छोड़ना पड़ा । अमरसिंह ने मुगलों की स्त्रियों, बच्चों, परिवारवालों और सैनिकों को बंदी बना लिया ।

राणा प्रताप ने जब लड़ाई में जीतने का समाचार सुना, तो वे कुँवर अमरसिंह को बधाई देने स्वयं आए । परंतु जब महाराणा को पता चला कि कुँवर ने मुगलों की स्त्रियों और परिवारवालों को बन्दी बना लिया है, तो वे अत्यंत क्रुद्ध होकर बोले, '' कुँवर ! लड़ाई जीतकर तुमने जो स्थान मेरे हृदय में प्राप्त किया था, वह समाप्त हो गया है । तुम नहीं जानते तुमने मुगलों की स्त्रियों और परिवारवालों को बन्दी बनाकर कितना बड़ा अपराध किया है । हमारी शत्रुता मुगल साम्राज्य से है, किसी व्यक्ति विशेष से नहीं । उनकी स्त्रियाँ भी हमारी माँ–बहनों के समान हैं ।''

राणा प्रताप ने स्वयं जाकर खानखाना की बेगम से भेंट की और कुँवर के अपराध के लिए क्षमा माँगी । उन्होंने आदेश दिया कि मुगलों की स्त्रियाँ और बच्चे सम्मान पूर्वक मुगलों के पास पहुँचा दिए जाएँ ।

अकबर ने जब देखा कि मुगलों की स्त्रियाँ और बच्चे राजपूतों के संरक्षण में सकुशल लौट रहे हैं, तो उसका सिर भी महाराणा प्रताप की धार्मिक सहिष्णुता के सामने आदर से झुक गया। संसार में अनेक धर्म हैं। सभी धर्म हमें अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं। वे सभी हमें असत्य से सत्य की ओर, बुराई से अच्छाई की ओर तथा पाप से पुण्य की ओर ले जाते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सभी धर्मों का आदर करें। भारतीय संस्कृति में तो विशेष रूप से कहा गया है कि किसी भी धर्म की निंदा मत करो।

ऐसी ही एक दूसरी घटना और पढ़िए।

एक बार गुरु गोविन्द सिंह को सूचना मिली कि किसी शत्रु ने उनके राज्य के किसी भाग पर अचानक हमला कर दिया है। उन्होंने अपने सैनिकों से उसका मुकाबला करने को कहा। युद्ध हुआ और उसमें सिखों की जीत हुई। अगले दिन गुरु के कुछ शिष्यों ने एक सिख सैनिक को उनके सामने प्रस्तुत किया और कहा, ''गुरु जी ! यह युद्ध के मैदान में सिख भाइयों के साथ-साथ दुश्मन के घायल सिपाहियों को भी पानी पिला रहा था। लगता है, यह दुश्मन से मिला हुआ है, इसे दण्ड मिलना चाहिए।''

गुरु गोविंद सिंह ने उस युवक से पूछा, ''क्या यह सच है कि तुम युद्धभूमि में शत्रु सेना के घायल सिपाहियों को पानी पिला रहे थे ?''

''हाँ, महाराज ! यह बिल्कुल सच है,'' वह बोला।

''पर क्या शत्रु के सैनिकों को पानी पिलाना उचित है ?'' गुरु ने पूछा।

''श्रीमान ! आप ही ने एक बार बताया था कि सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा है। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने उन्हें पानी पिलाया। यदि मुझसे कोई अपराध हो गया है, तो आप मुझे दण्ड दे सकते हैं, महाराज !'' वह युवक बोला।

गुरु गोविंद सिंह उस युवक के उत्तर से बेहद खुश हुए । उन्होंने कहा, ''मुझे खुशी है कि मेरे सारे शिष्यों में से धर्म का वास्तविक अर्थ केवल तुम्हीं ने समझा है । तुमने दुश्मन के घायल सैनिकों को पानी पिलाकर कोई अपराध नहीं किया, तुमने गुरु नानक की वाणी को सही तरह से समझा ही नहीं, अपने आचरण में भी उतारा है ।''

एक सैनिक ने शंका प्रकट की, ''यदि युद्ध में घायल पड़े शत्रु–सैनिक को पानी पिलाना धर्म का काम है तो फिर उसी सैनिक को युद्ध में मार गिराना तो अधर्म होना चाहिए ।''

''युद्ध में शत्रु सैनिक का सामना करना राष्ट्रधर्म है, जबकि घायल सैनिक को पानी पिलाना मानव धर्म है । किसी घायल, असहाय या दुर्बल व्यक्ति से केवल इसीलिए घृणा करना कि वह दूसरे धर्म का अनुयायी है, उचित नहीं है,'' गुरु गोविंद सिंह ने उत्तर दिया ।

हमारा देश भारत ऐसा देश है जहाँ अनेक धर्मों के लोग रहते हैं । भारत के संविधान के अनुसार सभी को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है । इसलिए देश की एकता और अखण्डता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय अपने–अपने धर्म का पालन करता हुआ भी किसी अन्य धर्म के प्रति घृणा या द्वेष का भाव न रखे । ईश्वर, अल्लाह, गॉड आदि उसी ईश्वर के अनेक नाम हैं । गांधी जी अपने भजन में ठीक ही गाया करते थे–'' ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान् ।''

बच्चो ! ध्यान रहे, इस साम्प्रदायिक भेद के कारण भारत की एकता पर आँच नहीं आनी चाहिए।

है साम्प्रदायिक भेद से कब ऐक्य मिट सकता अहो !
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो ।।

– **मैथिलीशरण गुप्त**

शब्दार्थ :– **बधाई** – मंगलकामना, **कुँवर**– राजकुमार, **संरक्षण**–निगरानी, हिफाजत, देखरेख, **सहिष्णुता** – सहनशीलता, **कर्त्तव्य** – फर्ज, (दायित्व), **विशेष** – असाधारण, असामान्य, **निन्दा** –दोष कथन, **अचानक** – अकास्मात, **सिख** – एक धर्म, पंथ, **राष्ट्रधर्म** – राष्ट्र के प्रति हमारे कर्त्तव्य, **सहाय** – लाचार, **दुर्बल** – कमजोर, **अनुयायी** – अनुचर, **संविधान** –विधि की व्यवस्था, **धार्मिक स्वतंत्रता** – धर्म को मानने की आजादी, **सन्मति** – अच्छी बुद्धि, **एक्य** –एकता।

अभ्यास

पाठ से

1. सर्वधर्म समभाव से आप क्या समझते हैं ?
2. राणा प्रताप ने कुँवर अमरसिंह को बधाई भी दी और उन पर क्रोधित भी हुए। क्यों ?
3. शत्रु–नारियों और बच्चों के प्रति राणा प्रताप की क्या धारणा थी ?
4. महाराणा प्रताप खानखाना की बेगम से क्षमा क्यों माँगते हैं ?
5. अकबर महाराणा के सामने क्यों झुक गया ?

6. शिष्यों ने गुरु गोविन्द सिंह से क्या शिकायत की ?
7. शिष्य के उत्तर से गुरु गोविन्द सिंह क्यों प्रभावित हुए ?
8. राष्ट्रधर्म और मानवधर्म का एक–एक उदाहरण दीजिए।
9. महाराणा प्रताप व गुरू गोविंद सिंह में कौन–सी समानताएँ थी ?
10. एक माला में भिन्न–भिन्न प्रकार के फूलों की बात (पाठ में) किस संदर्भ में कही गई है ?

पाठ से आगे

1. सभी धर्मो में मानव सेवा को सर्वोच्च माना गया है। आपके विचार से मानव सेवा किसे कहेंगे ? उदाहरण सहित बताइए।
2. आप अगर गुरू गोविंद सिंह के शिष्य की जगह होते तो क्या अपने शत्रु के घायल सिपाहियों को पानी पिलाते ? अपने विचार लिखिए।
3. महाराणा प्रताप ने मुगलों की स्त्रियों और बच्चों को सम्मान पूर्वक सुरक्षित वापस कर दिया। आपके विचार से दुश्मनों के परिवार को महाराणा प्रताप के द्वारा छोड़ना उचित था अथवा नहीं।
4. देश की अखण्डता एवं एकता के लिए हमें क्या करना चाहिए? अपने विचार लिखिए।
5. सभी धर्म असत्य से सत्य की ओर, बुराई से अच्छाई की ओर तथा पाप से पुण्य की ओर ले जाते हैं। इसके विपरीत अधर्म, हिंसा, तथा अशिक्षा हमें विनाश की आरे ले जाती है। कैसे? लिखिए।
6. यदि आपको कोई घायल व्यक्ति मिले तो आप क्या करेंगे? संक्षेप में लिखिए।

भाषा एवं व्याकरण

1. ''हाँ महाराज ! यह बिल्कुल सच है'' वह बोला।

   '' पर क्या शत्रु के सैनिकों को पानी पिलाना उचित है'' गुरू ने पूछा। उपरोक्त दोनों ही वाक्य में उद्धरण चिह्न ''.....'' का प्रयोग किया गया है।

   किसी के कथन को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। पाठ में आये उद्धरण चिह्न वाले अन्य वाक्यों को ढूँढकर लिखिए।
2. मानव शब्द में 'ता' प्रत्यय लगकर 'मानवता' शब्द बन जाता है। इस प्रकार वे शब्दांश जो शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं अथवा उसमें विशेषता उत्पन्न कर देते है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। इसी प्रकार से पाठ में आये 'ता' प्रत्यय लगे शब्दों की सूची बनाइए।
3. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए –

   1. सैनिकों से मुकाबला किया 2. सैनिक को प्रस्तुत किया।

   वाक्य में सैनिकों (बहुवचन) व दूसरे वाक्य में सैनिक (एकवचन) में लिखा हुआ है, अर्थात् ''पदों के जिस रूप में उसके एक या अनेक होने का बोध हो वह वचन कहलाता है।''

   जैसे :– लड़का–लड़के

   एकवचन में संज्ञापदों की एक संख्या का और बहुवचन में उसकी अनेक संख्याओं का बोध होता है। पाठ में आए एकवचन एवं बहुवचन संज्ञाओं को ढूँढकर लिखिए एंव उनका वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए। दिए गए उदाहरण के समान ही पाठ में आये हुए शब्दों को ढूँढकर एकवचन से बहुवचन बनाइए।

4. क्या संसार में अनेक धर्म हैं ?

गुरू गोविन्द सिंह उस युवक के उत्तर से खुश नहीं हुए।

पहले वाक्य में क्या लगा हुआ है अर्थात वह प्रश्न का बोध कराता है। ऐसे वाक्य जिसमें क्या, कब, कैसे पूछा जाये वहाँ प्रश्न सूचक वाक्य होता है। दूसरे वाक्य में किसी बात के न होने का भाव है अतः यह निषेध सूचक वाक्य है। अब आप पाँच प्रश्नवाचक एवं पाँच निषेधात्मक वाक्य बनाइए।

निर्देशानुसार वाक्यों को बनाइए।

1. यह सच है (प्रश्न वाचक)
2. उन्होनें आदेश दिया (निषेध वाचक)
3. सेना को मैदान छोड़ना पड़ा (प्रश्न वाचक)
4. उचित है। (निषेध वाचक)
5. पाठ में वाक्य दिया गया है – 'किसी भी धर्म की निंदा मत करो।' इस वाक्य में निंदा की जगह बुराई लिख दें तो वाक्य के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता।

ऐसे शब्द जिनके अर्थ में समानता होती है समानार्थक शब्द कहे जाते हैं। निम्नांकित वाक्यों में रेखांकित शब्दो के समनार्थी शब्द लिखिए।

1. हमारी शत्रुता मुगल साम्राज्य से है।
2. युद्ध हुआ और उसमें सिखों की जीत हुई।
3. इसे दण्ड मिलना चाहिए।
4. मैंने उन्हे पानी पिलाया।

6. निम्नलिखित शब्दों से ऐसे वाक्य बनाइए कि प्रत्येक का लिंग प्रकट हो जाए –

मुकाबला, युद्ध, सेना, लड़ाई, पानी, सुमन, भाला

7. 'धर्म' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाकर 'धार्मिक' शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए –

मर्म, कर्म, समाज, परिवार

8. 'हार' का विलोम शब्द 'जीत' है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बनाइए –

सत्य, अच्छाई, पुण्य, आदर

योग्यता विस्तार

1. महाराणा प्रताप व गुरू गोविंद सिंह जैसे ही छत्तीसगढ़ में भी वीर महापुरूष हुए हैं। उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर उनके नाम व कार्यो की सूची बनाइये।
2. ऐतिहासिक मुगलकालीन शासकों की सूची शिक्षक की सहायता से बनाइए।
3. ऐसे गीत/कविताओं का संकलन करें जिनमें सर्व धर्म समभाव निहित हो।